चन्द्रमा; **प्रजापतिः**=ब्रह्मा; **त्वम्**=आप; **प्रपितामहः**=पितामह; **च**=और; **नमः**=नमस्कार; **नमः ते**=पुनः नमस्कार; **अस्तु**=हो; **सहस्रकृत्वः**=हजारों बार, **पुनः**=फिर; **च**=भी; **भूयः**=बारम्बार; **अपि**=भी; **नमः**=नमस्कार; **नमः ते**=आपको नमस्कार है।

अनुवाद

प्रभो! आप वायु, यमराज, अग्नि, वरुण, चन्द्रमा, प्रजा के स्वामी ब्रह्मा और ब्रह्मा के भी पिता हैं। अतएव आपके लिये हजारों बार नमस्कार है; फिर भी बारम्बार नमस्कार है।।३९।।

तात्पर्य

श्रीभगवान् को वायु कहा गया है, क्योंकि वह सर्वव्यापक प्रधान देवता है। अर्जुन ने श्रीकृष्ण को पितामह भी कहा है।कारण, वे जगत् के प्रथम जीव—ब्रह्मा के पिता हैं।

नमः पुरस्तादथ पृष्ठतस्ते
नमोऽस्तु ते सर्वत एव सर्व।
अनन्तवीर्यामितविक्रमस्त्वं
सर्वं समाप्नोषि ततोऽसि सर्वः।।४०।।

नमः=नमस्कार; **पुरस्तात्**=आगे से; **अथ**=भी; **पृष्ठतः**=पीछे से भी; **ते**=आपको; **नमः**=नमस्कार; **अस्तु**=हो; **ते**=आपको; **सर्वतः**=सब ओर से; **एव सर्व**=(क्योंकि) आप सर्वरूप हैं; **अनन्तवीर्य**=हे अगाध सामर्थ्य वाले; **अमितविक्रमः**=अनन्त पराक्रमशाली; **त्वम्**=आप, **सर्वम्**=सब संसार को; **समाप्नोषि**=व्याप्त किये हुये हैं; **ततः**=इसलिए; **असि**=आप ही; **सर्वः**=सर्वरूप (हैं)।

अनुवाद

हे अनन्त सामर्थ्य वाले प्रभो! आपको आगे से नमस्कार है और पीछे से भी नमस्कार है। हे अमितपराक्रम! आप सब संसार को व्याप्त किये हुए हैं, इसलिए आप ही सर्वरूप हैं।।४०।।

तात्पर्य

सखा श्रीकृष्ण के लिये भक्तिभाव की अतिशयता के कारण अर्जुन उन्हें सब ओर से प्रणाम कर रहा है। वह मानता है कि वे सम्पूर्ण शक्तियों और पराक्रम के स्वामी हैं तथा युद्धभूमि में स्थित सभी महारथियों से कहीं अधिक श्रेष्ठ हैं। 'विष्णुपुराण' का वचन है, **योऽयं तवागतो देव समीपं देवतागणः। स त्वमेव जगत्स्रष्टा यतः सर्वगतो भवान्।।** "हे पुरुषोत्तम! आपके सामने आने वाला चाहे देवता ही क्यों न हो, वह आप से ही उत्पन्न हुआ है।"

सखेति मत्वा प्रसभं यदुक्तं
हे कृष्ण हे यादव हे सखेति।
अजानता महिमानं तवेदं
मया प्रमादात्प्रणयेन वापि।।४१।।